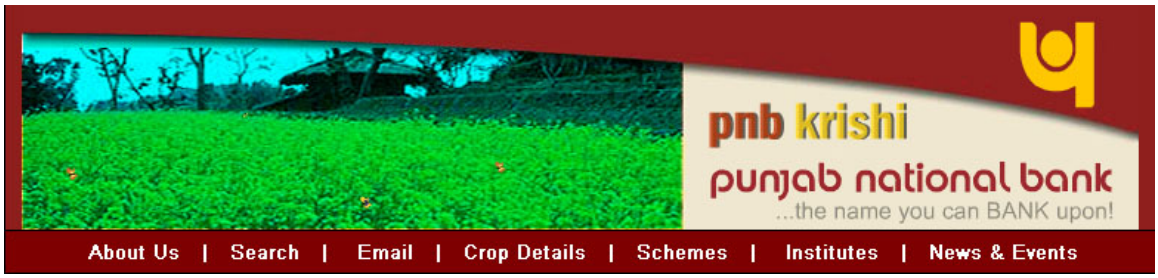

चने की फसल में कीट बीमारियों का प्रबंधन

चने में प्रमुख रूप से कटुआ लट, हरी लट एवं दीमक का प्रकोप होता है। इसी के साथ खड़ी फसल में जड़ गलन एवं झुलसा रोग का प्रकोप होता है।

कटुआ कीट

इसकी सुण्डी काटने-चबाने वाले मुखांगों से छोटे पौधों को जमीन की सतह से पूरा या उनकी शाखाओं को काटकर जमीन पर गिरा देती है। दिन में सुण्डी भूमि की दरारों में अथवा ढेलों के नीचे छिपी रहती है व रात्रि को निकल कर पत्तियों व कोमल शाखाओं को खाती है।

प्रबंधन

- सांयकाल से 2 घण्टे तक खेत के किनारे प्रकाशपाश द्वारा प्रौढ़ कीटों को आकर्षित कर मारें।
- अजाडिरेक्टिन 1500 पीपीएम 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव सुबह या सांयकाल में ही करें।
- जहां हर साल प्रकोप होता हो वहां एण्डोसल्फान 4 प्रतिशत या क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से आखिरी जुताई के समय जमीन में मिलायें।
- खड़ी फसल में कीट का प्रकोप होने पर सायंकाल मिथाईल पैराथिययॉन 2 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या एण्डोसल्फॉन 4 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकें।

हरी लट (हेलियोथिस)

विकसित सुण्डी 30-35 मि.मी. लम्बी हल्के हरे रंग की होती है व निचला तल चमकदार सफेद होता है। ऊपरी सतह के मध्य तथा दोनों बगलों में एक पीले रंग की धारी होती है।

प्रारम्भ में कोमल पत्तियों को व फलियों आने पर उनमें छेद कर अंदर के दाने खाती है। एक सुण्डी अपने जीवनकाल में 30 से 40 फलियां खाती है।

प्रबंधन

- सायंकाल से 2 घण्टे तक खेत के किनारे प्रकाश पाश द्वारा प्रौढ़ कीट को आकर्षित कर मारें।
- 5 फेरोमेन ट्रेप प्रति हेक्टेयर खेत में लगाये।
- एन.पी.वी. 250 एल ई 500-700 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से सायंकाल में छिड़काव करें।
- अजाडिरेक्टिन 1500 पीपीएम 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतर से दो बार छिड़कें।

- बी.टी. 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंदर से दो बार छिड़कें।
- कीट का प्रकोप अधिक होने पर मैलाथियान 5 प्रतिशत या मिथाईल पैराथयॉन 2 प्रतिशत या एण्डोसल्फॉन 4 प्रतिशत या क्यूनॉलफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें।
- पानी की सुविधा होने पर मैलाथियान 50 ई.सी. या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू.एस.सी. 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़कें।

दीमक

यह सर्वभक्षी कीट है जो जड़ों को काटकर पौधों को सुखा देती है। खेत में सूखे हुए पौधों की जड़ों को उखाड़कर देखने पर दीमक भागती दिखाई देती है। सिंचित स्थितियों में इस कीट की सक्रियता कम होती है, परन्तु असिंचित क्षेत्र में नुकसान अधिक होता है। रानी दीमक अनुकूल परिस्थितियों में प्रतिदिन 40,000 तक अण्डे दे सकती है।

प्रबंधन

- खेत के आस-पास दीमक के घरों को नष्ट करें।
- खेत के आस-पास खरपतवारों को नष्ट कर सफाई रखें।
- क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 मि.ली. प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करें।
- खड़ी फसल में प्रकोप होने पर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

जड़ गलन बीमारी

इसका प्रकोप होने पर स्वस्थ्य पौधे की हरी पत्तियां शुरू में मुरझाती हैं बाद में पूरा पौधा सूख कर मर जाता है। जड़ों का रंग गहरा भूरा से काला हो जाता है। रोग प्रकोप खेत में छितरा हुआ दिखाई देता है।

प्रबंधन

खेत को छोटी-छोटी क्यारियों में बांटे व सिंचाई की नाली बराबर में बनायें ताकि एक क्यारी का पानी दूसरी क्यारी में न जाए। बीमारी पूरे खेत में एक साथ न आकर छोटे-छोटे टुकड़ों में आती है, जिन्हें मेंडबंदी कर घेर दें तथा उसमें होकर अन्य खेतों में पानी का आवागमन न होने दें। बाद में इस जगह पर कचरा डाल कर आग लगा दें।